हाँ,

मैं किसी की माँ हूँ,

किसी की पत्नी भी हूँ,

एक बुजुर्ग की बहू भी तो हूँ,

साथ ही एक भाई की बहन भी तो हूँ, ही।

एक संस्कार, एक परम्परा,

एक विचार, एक प्रयास,

एक मानसिकता, एक नज़र,

एक सुरक्षा , एक प्रतिवद्धता,

एक डर, एक निर्भीकता,

यही सब तो पहचान है, ना मेरी..?

कभी तो सोचा होता,

अगली बार कही मैं ही तुम्हारी माँ बन के आऊँ,

कही तुम्हारी पत्नी बन के ही न आ जाऊँ,

कही तुम्हारी बहू रूप में आ गयी तो,

तुम्हारी बहन बन के ही आ जाऊँ..?

कुछ सोच तो नही, रहे ..?

क्या लगता है, कुछ छूट सा तो नही रहा..?

कोई रिश्ता टूट तो नही गया..?

ऊपर के सारे रिश्ते तो चाहिए, ही.., मुझे मालूम है।

फिर, मेरे बेटी रूप से क्यूँ नफ़रत करते हो..?

कोख में ही क्यूँ मार देते हो..?

ईश्वर का दिया जीवन , मुझे देखने भी नही देते..!

क्यूँ डरते हो..?

थोड़ा खाऊँगी, ज्यादा बचाऊंगी,

तुम्हे कोई दिक्कत भी नही दूँगी,

ससुराल भी बसाऊंगी, मायके की दुआ भी करुँगी।

सारे अरमान भाई -बाप के,

माँ के श्रृंगार का सहारा भी मैं,

घर के यज्ञ की जिम्मेदारी भी मेरी,

अब तो मान जाओ..!

मैं अब भी एक कोख के इंतज़ार में हूँ,

वचन दो, तभी तो आऊँ.!

याद रखना,

अगर मैं आज नही आ सकी, तो,

कल तुम भी नही आ सकोगे..!